

मणिपुर में हिंदी की स्थिति

- डॉ. ई. विजय लक्ष्मी

भारत में राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। हिंदी को ये पद उसकी अपनी विशेषताओं के कारण प्राप्त हुआ है। किसी भी भाषा को जन भाषा या सम्पर्क भाषा बनने के लिए सामाजिक आवश्यकताओं के पूर्ति की क्षमता, रचनात्मक शक्ति और साहित्यिक एवं कलात्मक योग्यता से परिपूर्ण होना चाहिए। हिंदी में ये सारी विशेषताएँ मौजूद हैं। इसलिए हिंदी का प्रयोग न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी बढ़ रहा है। कहना गलत न होगा कि आज तकनीकी विकास के इस दौर में भी हिंदी का प्रयोग बड़ी तेजी बढ़ रहा है।

मणिपुर में हिंदी का प्रयोग कब और कैसे शुरू हुआ, इसका निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के बीच भारत के प्रमुख हिंदी प्रदेशों से अनेक ब्राह्मण, मुगलों के आक्रमण से भयभीत होकर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चले गए थे। प्रबंधन के माध्यम से बहुत लोग मणिपुर भी पहुँचे, तथ मणिपुर वासियों का परिचय हिंदी से हुआ। चौधरोल कुम्बाबा के अनुसार इस तथ्य की जानकारी भी मिलती है कि पन्द्रहवीं शताब्दी में राजा कियाम्बा द्वारा लमलाइदोड या विष्णुपुर में स्थापित विष्णु मन्दिर में पूजा-अनुष्ठान करवाने के लिए ब्राह्मण नियुक्त किए गए थे। ये ब्राह्मण अपने साथ अपनी भाषा और अपनी संस्कृति लेकर आए थे, जिनके समन्वय से मणिपुर में एक नई संस्कृति का जन्म हुआ। ईश्वर की पूजा आराधना जैसी धार्मिक क्रियाओं में ये ब्राह्मण संस्कृत तथा हिंदी की शब्दावली का प्रयोग करते थे। अठारहवीं शताब्दी में पामर्हवा अर्थात् महाराजा गरीबनवाज द्वारा अपने शासन काल में वैष्णव धर्म को राज धर्म घोषित कर दिए जाने के बाद तो वैष्णव पदावली तथा जयदेव के गीतगोविन्द के पदों का गान मणिपुरी समाज सांस्कृतिक तथा धार्मिक क्रियाओं का अनिवार्य अंग बन गया। वैष्णव धर्मावलम्बी मणिपुरी लोगों के मन में काशी, हरिद्वार, नवद्वीप, पुरी, वृन्दावन आदि क्षेत्रों के प्रति श्रद्धा का भाव जागा। इन तीर्थ स्थलों की यात्रा के कारण भी हिंदी तथा यहाँ की बोलियों से मणिपुर के लोगों का परिचय बढ़ा। अठारहवीं शताब्दी में जब अंग्रेज मणिपुर आए उस समय वे अपने साथ कुछ बांग्ला तथा हिंदी भाषी अधिकारियों को भी साथ लाए थे। उनसे सम्पर्क स्थापित करने के लिए भी मणिपुर के लोगों को हिंदी की आवश्यकता महसूस हुई। उन्नीसवीं शताब्दी में महाराज चुड़ाचाँद के शासन काल में औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था के लिए विद्यालयों की स्थापना की गई। मेधावी विद्यार्थियों को मणिपुर से बाहर विद्याध्ययन के लिए भेजा गया। काशी, प्रयाग, नवद्वीप जैसे धार्मिक स्थलों में रहकर उन विद्यार्थियों ने संस्कृत के साथ हिंदी का भी ज्ञान प्राप्त किया। इसके साथ मणिपुर में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में हिंदी भाषी व्यापारियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान जब गांधी जी ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दुस्तानी की वकालत की और उसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता जताई तो विभिन्न प्रदेशों के साथ मणिपुर में भी राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को ही मान्यता देने के पक्ष में अनेक लोग सामने आए। पं. राधामोहन शर्मा, थोकचोम मधु सिंह, ललिता माधव शर्मा और केशाम कुंजबिहारी ऐसे ही व्यक्तित्व हैं, जिनपर गांधी जी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वास्तव में इन्हें मणिपुर में हिंदी प्रचार-प्रसार के आदि स्तंभ के रूप में माना जाना चाहिए। आज मणिपुर में हिंदी का जो एक समृद्ध रूप देखने को मिलता है, वह सहज परिस्थितियों के कारण उत्पन्न नहीं हुआ है। बल्कि इन निःस्वार्थ हिंदी सेवियों की आहुतियों का परिणाम है। विपरीत परिस्थितियों से जूझने की उनकी प्रवृत्ति और अनथक प्रयासों के बदौलत ही हिंदी को यह स्थान प्राप्त हुआ है। उन त्यागमय हिंदी सेवियों के अमूल्य योगदान को याद किए बिना मणिपुर में हिंदी की स्थिति को पूर्णतः समझा नहीं जा सकता।

हिंदी प्रचार के प्रारंभिक समय में पं. राधामोहन शर्मा थोकचोम मधु सिंह के साथ मिलकर 'हिंदी विद्यालय' स्थापित की और हिंदी अध्यापन का कार्य आरंभ किया। केशाम कुंजबिहारी ने मोइराडखोम और तेरा बाजार में हिंदी स्कूल किया शुरुआत की। आगे चलकर इन्होंने ही 'राष्ट्रलिपि स्कूल' की भी स्थापना की। सन् 1933ई. में इम्फाल के व्यापारी वर्ग के प्रयासों से सेठ भैरोदान के नाम पर 'भैरोदान हिंदी स्कूल' की स्थापना हुई। इनके अलावा मणिपुर में हिंदी की स्थिति को मजबूत करने वाले महानुभावों में हुइरोम अतुलचन्द्र सिंह, लाइपुबम भागवत देव, अरिबम छत्रध्वज शर्मा, डांहांमै मथियुचुड (मेरा कबुई), हिदडमयुम द्विजमणि देव शर्मा, चिगाइइखम कलाचाँद शास्त्री आदि अनेक लोग हैं जिनपर अलग से शोध कार्य तक किया जा सकता है।

मणिपुर में संस्थागत हिंदी प्रचार के सम्बन्ध में प्रामाणिक तौर पर इस तथ्य की जानकारी मिलती है कि सन् 1928ई. में 'हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' द्वारा हिंदी प्रचार का कार्य शुरू किया गया। अतः माना जा सकता है कि इसी संस्था के माध्यम से मणिपुर में संस्थागत हिंदी प्रचार की नींव पड़ी। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अन्तर्गत सन् 1940ई. में 'मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना हुई। सन् 1953ई. में 'मणिपुर हिंदी परिषद्' एक स्वैच्छिक हिंदी प्रचार संस्था के रूप में अस्तित्व में आया। इन संस्थाओं के साथ नागरी लिपि प्रचार सभा (1958 ई.) नागा हिंदी विद्यापीठ (1970 ई.). मणिपुर ट्रायवेल्स हिंदी सेवा समिति (1982 ई.) आदि समय-समय पर स्थापित संस्थाएँ हैं, जिन्होंने मणिपुर में हिंदी प्रचार को गति प्रदान की। अखिल मणिपुर हिंदी शिक्षक संघ और मणिपुर हिंदी शिक्षक संघ जैसी संस्थाएँ भी मणिपुर में हिंदी की स्थिति को मजबूत करने की कोशिश में लगी हैं। सरकारी योजनाओं के तहत केन्द्रीय हिंदी शिक्षण योजना के अलावा हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण, महाविद्यालय आदि में आयोजित हिंदी सम्बन्धी कार्यक्रमों के कारण मणिपुर में हिंदी का एक सशक्त रूप उभर कर आता है। मणिपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में होने वाली स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा, शोध तथा अनुवाद के कार्य मणिपुर में हिंदी की स्थिति को मजबूत करने वाले हैं। आकाशवाणी इम्फाल केन्द्र

से प्रसारित होने वाले हिंदी सम्बन्धी कार्यक्रम हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने वाले हैं। अतः कहा जा सकता है कि ये कार्यक्रम भी मणिपुर में हिंदी की स्थिति को मजबूत करने में सहायक है।

मणिपुर में हिंदी पत्रकारिता ने भी हिंदी की स्थिति को मजबूत किया है। मणिपुर में हिंदी पत्रकारिता के सम्बन्ध में यह तथ्य उपलब्ध है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक हस्त लिखित पत्रिका प्रकाशित हुई थी, परन्तु इसके संपादक के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। सन् पचास के बाद दूसरी पत्रिका साइक्लोस्टाइल में निकाली गई, जिसका नाम 'कामाख्या न्यूज एक्सप्रेस' था। इसके बाद मणिपुर में प्रकाशित जिन पत्र पत्रिकाओं ने हिंदी प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनमें उल्लेखनीय हैं- सम्मेलन गजट, नई शिक्षा, नागरिक पन्थ, चिन्तना, हिंदी शिक्षक द्वीप, युमशकैश, कुन्दो परेड, महिप, चयोल पाउ, लटचम आदि परन्तु इनमें से कुछ धनाभाव या अन्य किसी न किसी कारण से अल्पकालिक सिद्ध हुई। महिप, चयोल पाउ, लटचम और युमशकैश ऐसी पत्रिकाएँ हैं जो वर्तमान में हिंदी सेवा में जुटे लोगों की प्रतिबद्धता सिद्ध करती हैं।

मणिपुर में हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन के माध्यम से भी हिंदी के व्यापक प्रयोग को समझा जा सकता है। मणिपुर में हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि मणिपुर में सन् पचास के आस-पास जो पहली हिंदी पुस्तक प्रकाशित हुई। वह अतोम बाबू शर्मा की धर्म सम्बन्धी पुस्तक थी। इसके पश्चात् आज तक अनेक पाठ्य- पुस्तकों तथा मौलिक रचनाओं का प्रकाशन हो चुका है। क्षितिज सा ध्येय (आचार्य राधागोविंद कविराज), मोतै चनु (सं. देवराज), राष्ट्रीय चेतना चिंतन (ह. गोकुलानंद शर्मा), सिद्धेश्वर चालिसा (शिवगोविंद दास), प्रयास (सं. देवराज), खम्ब- थोइबी (निशान सिंह), वीर टिकेन्द्रजीत (के वाइमा शर्मा) आदि कुछ पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। इन पुस्तकों के अलावा आज तक अनेक पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं। हिंदी से मणिपुरी तथा मणिपुरी से हिंदी में अनूदित सामग्रियाँ भी लगातार प्रकाशित हो रही हैं। इतना होने के बावजूद यह कहना गलत न होगा कि अहिंदी प्रदेश होने के नाते मणिपुर में हिंदी को वह स्थान नहीं मिल पाया है। जिसकी वह हकदार है। मणिपुर में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए अब तक व्यक्तिगत तथा संगठनात्मक स्तर पर जितने भी प्रयास हुए हैं। वे सराहनीय हैं। उनके प्रयासों को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता, किन्तु यह भी सत्य है कि आज मणिपुर में हिंदी का अपेक्षित विकास नहीं हो रहा। इसके अनेक कारण हो सकते

1. भाषा सम्बन्धी समस्या हिंदी तथा मणिपुरी दो भिन्न प्रकृति की भाषाएँ हैं। दोनों ही दो भिन्न भाषा परिवार से होने के कारण उनमें अनेक अंतर देखने को मिलते हैं। मणिपुरी तान प्रधान भाषा है इसलिए इसकी लिपि ही भिन्न नहीं है बल्कि शब्द, उच्चारण तथा व्याकरण भी भिन्न है। इसलिए हिंदी सीखते समय मणिपुरी भाषी लोगों को हिंदी व्याकरण की नींव समझने में परेशानी होती है। अक्सर लिंग, वचन, कारक की सही जानकारी के अभाव में सही हिंदी सीख पाने में परेशानी होती है।

2. सामाजिक मानसिकता व्यक्ति के विचारों पर राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। समय के साथ परिस्थिति में जो बदलाव हो रहे हैं, उसने भी मणिपुर में हिंदी के प्रचार और

प्रसार को प्रभावित किया है। आज हिंदी के प्रति वह मानसिक जुड़ाव नजर नहीं आता, जो हिंदी प्रचार के प्रारंभिक कालों में हिंदी सेवियों में दिखाई देते थे।' निःस्वार्थ और त्यागपूर्ण भावना आज के दौर में कुछ हिंदी सेवियों को छोड़कर, कम ही देखने को मिलती हैं।

3. व्यापार या अर्थ की भाषा एक समय ऐसा था जब बाजार में हिंदी भाषी लोगों की संख्या अधिक थी। ऐसे में व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए लोग स्वतः हिंदी सीखते थे, परन्तु आज हिंदी पूरी तरह बाजार की भाषा नहीं बन पाई है। हिंदी भाषी भी आज प्रायः मणिपुरी में वार्तालाप करते देखे जा सकते हैं। मणिपुर में हिंदी का सीधा सम्बन्ध अर्थ से न होने के कारण भी हिंदी का प्रचार कम हुआ है।

4. रोजगार सम्बन्धी समस्या शिक्षा का एक उद्देश्य रोजगार से जुड़ा हुआ है। हिंदी के प्रति आकर्षण का एक कारण रोजगार भी है, परन्तु मणिपुर में हिंदी रोजगार की भी भाषा नहीं बन पाई है। हिंदी पढ़ने के बाद कुछ नौकरियाँ जरूर मिल जाती हैं पर वह बड़ी नौकरियाँ नहीं होतीं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी पदों की संख्या सीमित होती है तथा सरकारी विभागों में पदों का नितांत अभाव है। वहाँ भी कुछ गिने-चुने पद ही होते हैं। इसलिए भी लोग हिंदी की ओर कम आकर्षित होते हैं।

5. युवा वर्ग की भूमिका आज के वैज्ञानिक तथा तकनीकी युग में युवा तेज रफ्तार को पसंद करते हैं। उन्हें हर चीज तुरन्त चाहिए इसलिए हिंदी प्रचार संस्थाओं से युवा-वर्ग का जुड़ाव कम होता जा रहा है। जिस भावनात्मक जुड़ाव के कारण लोग इन संस्थाओं से जुड़ते थे, आज वह भावना लोगों में कम दिखाई देती है, इसका कारण हिंदी के प्रति प्रेम व श्रद्धा भाव में कमी को माना जा सकता है। यह सच है कि आज खासकर युवा वर्ग की रुचि हिंदी से घट रही है। कुछ अगर जुड़ते भी हैं तो वे नौकरी पाने तक ही जुड़े रह पाते हैं इसलिए नौकरी लग जाने के बाद पहले की तरह संस्था के कामों को समय नहीं दे पाते अतः हिंदी से जुड़ी गतिविधियाँ कम हो जाती हैं।

6. शिक्षण सम्बन्धी समस्या हिंदी शिक्षण केन्द्रों में कार्यरत सभी शिक्षक प्रायः भाषा में प्रशिक्षित नहीं हैं। या तो वे अपना शौक पूरा करने के लिए संस्थाओं से जुड़ते हैं या फिर आर्थिक कारणों से शिक्षण संस्थाएँ चलाते हैं। इसलिए इन संस्थाओं में प्रवेश के बावजूद शिक्षा सही ढंग से नहीं हो पाती। इन शिक्षण केन्द्रों से निकलने वाले विद्यार्थी ठीक से हिंदी बोलना तक नहीं सीख पाते।

7. धनाभाव- हिंदी प्रचार और प्रसार के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक निश्चित रकम की जरूरत तो पड़ती ही है। राज्य सरकार और केन्द्र सरकार की ओर से मणिपुर में कार्यरत संस्थाओं को अनुदान के रूप में कुछ रकम मिलती तो है, परन्तु वह वर्ष के एक निश्चित समय पर ही दी जाती है। इसके साथ ही वह रकम पर्याप्त नहीं होती कि संस्थाएँ उस अनुदान के सहारे सारी योजनाओं को अंजाम दे सकें। अतः संस्थाएँ हिंदी प्रचार के काम को पूरा नहीं कर पाती।

8. अंग्रेजी के प्रति मोह आज के बदलते परिदृश्य में सम्पूर्ण विश्व एक इकाई बन गया है। ऐसे में विश्व भर से संवाद के लिए अंग्रेजी का जानना जरूरी हो जाता है, इसलिए लोगों की रुचि अंग्रेजी के प्रति बढ़ रही है। राज्य स्तर पर भी हिंदी अनिवार्य न होने के कारण भी हिंदी का प्रचार- प्रसार अवरुद्ध हुआ है।

दूसरी ओर सरकारी काम-काज के लिए भी हिंदी जानना आवश्यक नहीं है अतः हिंदी की ओर लोगों का ध्यान कम जाता है।

जहाँ तक इन समस्याओं के समाधान का प्रश्न है तो इसे हिंदी से जुड़े सभी विद्वत्जन को मिलकर खोजना चाहिए, जिसमें हिंदी प्रचार संस्थाओं और हिंदी प्रचारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। मणिपुर में हिंदी प्रयोग सम्बन्धी जो समस्याएँ उभर रही हैं उन समस्याओं का हल न तो किताबों में है न ही चंद बातें यहाँ कह देने से हो सकता है। वास्तव में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का कार्य समर्पण भावना के साथ किया जाना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि हिंदी प्रचार से जुड़े सभी अपना सब कुछ हिंदी प्रचार में लगा दें परन्तु अपनी जिम्मेदारी के प्रति ईमानदार बने रहना नितान्त आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति या संस्था अपने बूते पर मणिपुर में हिंदी की स्थिति को सुधार नहीं सकता इसलिए सरकारी स्तर पर इसके लिए निश्चित योजना बनाई जानी चाहिए। साथ ही उनका क्रियान्वयन भी उतने ही लगन से किया जाना चाहिए। यही नहीं संस्थाओं की कार्य पद्धति का भी पुनरीक्षण होना चाहिए। हिंदी से जुड़े लोगों को यह समझना होगा कि हिंदी सीखने का अर्थ केवल क ख ग सीखना नहीं है, बल्कि उसे अभिव्यक्ति की भाषा भी बनानी है। अपनी संस्कृति और अपने इतिहास को व्यक्त करने की भाषा बनानी है। हिंदी हमारी अपनी भाषा मणिपुरी को उन्नत करने का माध्यम भी हो सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज हिंदी की स्थिति सुदृढ़ हो रही है। विश्व के प्रमुख देशों ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, जर्मनी, चीन, जापान यहाँ तक कि थाइलैण्ड और कोरिया में भी प्रतिष्ठित और मान्यता प्राप्त है। हिंदी के माध्यम से न केवल भारत में बल्कि विश्व की दौड़ में भी शामिल हो सकते हैं। हिंदी के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा का लाभ उठाया जा सकता है। इसी के साथ हमें यह भी समझना होगा कि हिंदी के माध्यम से विश्व को मणिपुरी भाषा और संस्कृति का परिचय दिया जा सकता है। ऐसी स्थिति में मणिपुर में हिंदी प्रचारकों तथा संस्थाओं के समक्ष तमाम समस्याओं के होते हुए समझदारी, कौशल और समर्पण भावना के साथ योजनाबद्ध ढंग से यदि प्रचार कार्य करें तो निश्चित रूप से मणिपुर में हिंदी की स्थिति को सुदृढ़ किया जा सकता है।

सहायक ग्रंथ-

1. अरिबा मणिपुरी साहित्य गी इतिहास, निडथौखोडजम खेलचन्द्र, तीसरा संस्करण 2004.
2. अ हिस्ट्री ऑफ मणिपुरी लिटरेचर, सीएच. मणिहार, तीसरा संस्करण-2013, साहित्य अकादमी ISSN: 978-81-260-4212-8
3. मणिपुर इतिहास- राजकुमार सनाहल सिंह, प्रकाशक श्री डाडोम तोम्पोक सिंह- 1947
4. मणिपुर : विविध संदर्भ, सं। देवराज हिंदी परिषद, हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय इम्फाल ।